75 Glorious Years of National Defence Academy

The National Defence Academy(NDA) at Khadakwasla, Pune is a premier defence institution and a hallmark of global excellence in the sphere of military training. The idea of NDA as a training institution was conceived post the World War II to promote jointmanship and integrate the efforts of the future officers of the Army, Navy and the Air Force to deliver as a potent joint force in the face of the adversary.

NDA Khadakwasla is one of the first institutions in the world to impart combined training to officer cadets of the three services. The concept and genesis of NDA dates back to the period before Independence when a committee of eminent persons was entrusted with the evolution of a scheme to implement the joint services training concept. The scheme took shape and after a great deal of search and discussion, the site of World War II Combined Warfare School in the vicinity of Khadakwasla Lake near Pune was selected for the new academy.

In pursuance of this Scheme in 1946, the Indian Military Academy was initially renamed as the Armed Forces Academy and split into two wings, the "Inter Services Wing" and the "Military Wing". The first batch of 190 cadets of the Army, Navy and Air Force commenced combined training on 16 January 1949 at Dehradun, in the Inter Services Wing (later renamed the "Joint Services Wing" or JSW).

The foundation stone of the NDA was laid by the then Prime Minister, Pandit Jawaharlal Nehru on 06 October 1949. NDA was formally inaugurated by the then Chief Minister of Mumbai, Shri Morarji Desai, on 16 January 1955. The first passing out parade, held at Khadakwasla was reviewed by Pandit Jawaharlal Nehru on 05 June 1955. The Joint Services Wing at Dehradun was subsequently relocated at Khadakwasla and came to be known as the "National Defence Academy".

The NDA continues in its march towards nation building, confident that in the years to come, it will draw the finest of India's youth who will pass through the portals of this "Cradle of Leadership", perpetuating through their gallantry, dedication and sacrifice, the Academy's motto "Seva Parmo Dharma".

During the last seven decades, the Academy has established itself as an institution of rare distinction and rendered exemplary services to the nation. It has produced legends not only in the field of Military leadership but also in the field of science, technology, arts, literature and sports. The Academy is a unifying symbol of integration and jointmanship among the three wings of the Defence Services. The alumni of this unique nursery for character building and leadership have validated the objectives for which their Alma mater was established through their selfless service of loyalty, valour and heroism both in peace and in war – at home and abroad.

Since its inception, it has trained more than 38,000 cadets, including over 1,000 cadets from 32 friendly foreign countries. It has given the country two Chiefs of Defence Staff (CDS) and several of its Service Chiefs. Three of its alumni have been honoured with Param Vir Chakra and 12 with the Ashok Chakra, the nation's highest awards for gallantry in war and peace respectively. The other gallantry awards of the alumni include 32 MahaVir Chakras, 45 Kirti Chakras, 163 Vir Chakras and 152 Shourya Chakras. The Academy is proud of its alumni who have made the supreme sacrifice for their motherland. The NDA has the distinction of producing 2 CDS & several Chiefs of the three services.

The NDA will complete seventy-five years of eventful existence in January 2024 during which the 151st Course will join the Academy. The year 2022 was etched in the golden letters in the history of NDA as for the first time female cadets joined 148th NDA course paving the way for the other young girls in the country to follow their dream and become future military leaders. Their indomitable performance has put NDA on the global arena of military and political leadership.

On 16 January 2024, NDA will be completing 75 glorious years in service to the nation. It remains committed to maintain the highest traditions and toughest standards of its training and rededicates its unflinching commitment to the nation on this momentous occasion.

The Department of Posts is proud to issue Commemorative Postage Stamp (CPS) on 75 Glorious years of National Defence Academy and appreciates its roles as the true foundation of India's defence edifice.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure	:	Ms. Himani
Cancellation Cachet	:	Ms. Nenu Gupta
Text	:	Referenced from the content provided by the proponent

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के 75 गौरवशाली वर्ष

खडकवासला, पुणे स्थित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए), एक प्रमुख रक्षा संस्थान है और सैन्य प्रशिक्षण के क्षेत्र में वैश्विक उत्कृष्टता की मिसाल है। प्रशिक्षण संस्थान के रूप में एनडीए की अवधारणा की संकल्पना द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की गई। इसका उद्देश्य थल सेना, नौसेना और वायु सेना के भावी अधिकारियों को संयुक्त कौशल और एकीकरण की भावना से इस प्रकार युक्त करना है ताकि दुश्मन का मुकाबला करते हुए सेना के तीनों अंग मिलकर संगठित रूप से कार्रवाई करने में शक्तिशाली बल सिद्ध हों।

एनडीए खडकवासला, तीनों सेनाओं के अधिकारी कैडेटों को संयुक्त प्रशिक्षण प्रदान करने वाले दुनिया के पहले संस्थानों में से एक है। एनडीए की संकल्पना और स्थापना स्वतंत्रता–पूर्व उस समय की गई, जब विशिष्ट व्यक्तियों की एक समिति को संयुक्त सेवा प्रशिक्षण की योजना के कार्यान्वयन की रूप–रेखा तैयार करने का दायित्व सौंपा गया। तत्पश्चात् इस योजना ने आकार लेना प्रारंभ किया और विशद विचार–विमर्श के बाद पुणे के पास खडकवासला झील के निकट स्थित द्वितीय विश्व युद्ध संयुक्त वॉरफेयर स्कूल को नई अकादमी के स्थान के रूप में चुना गया।

1946 में इस योजना के कार्यान्वयन के रूप में भारतीय सैन्य अकादमी को शुरू में सशस्त्र बल अकादमी का नाम दिया गया और इसे दो शाखाओं (विंग) में विभाजित किया गया, ''इंटर सर्विसेज विंग'' और ''मिलिट्री विंग''। थल सेना, नौसेना और वायु सेना के 190 कैडेटों के पहले बैच का संयुक्त प्रशिक्षण इंटर सर्विसेज विंग (बाद में इसका नाम बदलकर ''संयुक्त सेवा विंग'' अर्थात् जेएसडब्ल्यू कर दिया गया), देहरादून में 16 जनवरी 1949 को प्रारंभ हुआ।

एनडीए की आधारशिला, तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा 06 अक्तूबर 1949 को रखी गई। इसका औपचारिक उद्घाटन 16 जनवरी 1955 को बंबई के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने किया। खडकवासला में हुई पहली पासिंग आउट परेड का पुनरीक्षण (रीव्यू) 05 जून 1955 को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया। देहरादून स्थित संयुक्त सेवा विंग को बाद में खडकवासला में पुनर्स्थापित किया गया और इसे ''राष्ट्रीय रक्षा अकादमी'' का नाम दिया गया।

एनडीए इस विश्वास के साथ राष्ट्र निर्माण के पथ पर अग्रसर है कि इस संस्थान में भारत के सुयोग्य युवा प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे और अपने शौर्य, समर्पण और त्याग से नेतृत्व भावना के इस जनक संस्थान के आदर्श वाक्य ''सेवा परमो धर्म'' को चरितार्थ करेंगे।

विगत सात दशकों के दौरान इस अकादमी ने स्वयं को असाधारण रूप से उत्कृष्ट संस्थान के रूप में स्थापित किया है और राष्ट्र निर्माण की दिशा में बेमिसाल सेवाएं प्रदान की हैं। इस संस्थान ने देश को न केवल सैन्य नेतृत्व के क्षेत्र में, बल्कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला, साहित्य और खेल–कूद के क्षेत्र के दिग्गज भी दिए हैं। यह अकादमी, रक्षा सेवाओं के तीनों विंग के बीच एकीकरण और संयुक्त कौशल का प्रतीक है। चरित्र निर्माण और नेतृत्व भावना के इस उत्कृष्ट संस्थान के पूर्व–छात्रों ने देश और विदेश दोनों में, शांति और युद्ध काल में, अपनी वफादारी, साहस और वीरता की निस्वार्थ भावना के माध्यम से अपने जनक संस्थान के उद्देश्यों का बखूबी मान रखा है।

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की स्थापना के बाद से अब तक यहां 38,000 से अधिक कैडेटों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है। इनमें भारत से मैत्रीपूर्ण संबंध रखने वाले 32 देशों के 1,000 से अधिक कैडेट भी शामिल हैं। इस अकादमी ने देश को दो चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) और कई सेवा प्रमुख भी दिए हैं। इस अकादमी के तीन पूर्व छात्रों को परमवीर चक्र और 12 को अशोक चक्र से सम्मानित किया गया है, जो क्रमशः युद्ध और शांति काल में वीरता के लिए दिए जाने वाले देश के सर्वोच्च पुरस्कार हैं। इस संस्थान के पूर्व–छात्रों को प्राप्त अन्य वीरता पुरस्कारों में 32 महावीर चक्र, 45 कीर्ति चक्र, 163 वीर चक्र और 152 शौर्य चक्र शामिल हैं। अकादमी को अपने उन पूर्व–छात्रों पर गर्व है, जिन्होंने मातृभूमि के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। एनडीए को 2 सीडीएस और तीनों सेनाओं के कई प्रमुख देने का भी गौरव प्राप्त है।

एनडीए, जनवरी 2024 में अपनी स्थापना के 75 वर्ष पूरे करने जा रहा है। इसी समय 151वें कोर्स के प्रशिक्षु भी अकादमी में शामिल होंगे। एनडीए के इतिहास में वर्ष 2022 सुनहरे अक्षरों में अंकित है क्योंकि इस वर्ष पहली बार महिला कैडेट एनडीए (148वां पाठ्यक्रम) में शामिल हुईं और देश की अन्य युवा लड़कियों के लिए अपने सपनों को पूरा करने और भावी सैन्य अधिकारी बनने का मार्ग प्रशस्त किया। इन कैडेटों के अदम्य साहस प्रदर्शन ने एनडीए को सैन्य और राजनीतिक नेतृत्व के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई है।

16 जनवरी 2024 को एनडीए राष्ट्र की सेवा में 75 गौरवशाली वर्ष पूरे करेगा। इस महत्वपूर्ण अवसर पर यह अकादमी राष्ट्र की सेवा में अडिग प्रतिबद्धता के संकल्प को पुनः दोहराते हुए अपनी परम्पराओं एवं प्रशिक्षण के कड़े एवं उच्च मानकों को बनाए रखने के प्रति कृतसंकल्प है।

डाक विभाग, 'राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के 75 गौरवशाली वर्ष' विषय पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है और भारत के रक्षा तंत्र की आधारशिला के रूप में इसकी भूमिका की सराहना करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण : सुश्री हिमानी
विरूपण कैशे : सुश्री नीनू गुप्ता
पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रित डाक टिकटें	: 302100
Stamps Printed	: 302100
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00